



लाभकारी पौष्टिक किस्म वी.एल. धान-69

एन.के. सिंह, राज कुमार, कमल कुमार पाण्डे, हरीश चंद जोशी, अमित कुमार और जे. पी. आदित्य

जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का सबसे बड़ा देश है, जहां लगभग 70 प्रतिशत आबादी शाकाहारी है। ऐसे में पौष्टिक आहार की उपलब्धता बढ़ाने तथा किसानों की आय में वृद्धि के लिए भाकृअनुप के अंतर्गत विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) द्वारा वर्ष 2021 में लाल धान की नई किस्म वी.एल. धान 69 विकसित की गई। यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में अधिक उत्पादन देने के साथ-साथ पोषक तत्वों एवं एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है। वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर वर्ष 2023 और 2024 में क्रमशः 49.40 और 52.50 क्विंटल प्रति हैक्टर उत्पादन प्राप्त हुआ। इस अवधि में कुल लागत 53,480 एवं 55,520 रुपये रही, जबकि सकल आय 1,41,620 और 1,61,000 रुपये दर्ज की गई। इससे क्रमशः 88,140 और 1,05,480 रुपये शुद्ध आय तथा 2.64 और 2.89 का लागत-आय अनुपात प्राप्त हुआ। वर्तमान में जिले के 103 किसानों के 10.02 हैक्टर क्षेत्र में इसकी खेती की जा रही है, जिसके विस्तार की अपार संभावनाएं हैं।

भारत में बड़ी आबादी शाकाहारी होने के कारण पौष्टिक खाद्यान्नों की मांग लगातार बढ़ रही है। अधिक उपज और आय के कारण किसान पारंपरिक, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट फसलों को छोड़कर संकर किस्मों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। धान देश के बड़े हिस्से, विशेषकर पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों, का प्रमुख दैनिक आहार है।

ऐसे में देशवासियों को पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाने और किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से भाकृअनुप के अंतर्गत विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) द्वारा वर्ष 2021 में लाल धान की नई किस्म वी.एल. धान 69 विकसित की गई।

यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में अधिक उत्पादन देने के साथ-साथ पोषक तत्वों और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है। यह किस्म

खाद्यान्न सुरक्षा के साथ-साथ पौष्टिक खाद्य सुरक्षा को भी मजबूत बनाने में सहायक है। इससे पहले बागेश्वर जिले में लाल धान की खेती सीमित क्षेत्र, मुख्यतः उपराऊं (वर्षा-आश्रित) क्षेत्रों तक ही सीमित थी, जिससे उत्पादन और किसानों की आय अपेक्षाकृत कम रहती थी।

लाल धान वी.एल. 69 तथा स्थानीय किस्म के पौधों में औसत पौधा ऊंचाई क्रमशः 103.14 एवं 111.23 सें.मी. दर्ज की गई। इसी प्रकार प्रति पौधा कल्लों की संख्या 14 एवं 9 तथा पुष्प गुच्छों की संख्या 14 एवं 7 पाई गई। परीक्षण वजन क्रमशः 25.14 एवं 19.23 ग्राम दर्ज किया गया। दानों का रंग वी.एल. धान 69 में लालिमायुक्त भूरा, जबकि स्थानीय किस्म में हल्का गुलाबी पाया गया।

जिले में लाल धान का उत्पादन

कृषि विज्ञान केन्द्र काफलीगैर, बागेश्वर द्वारा जिले में लाल धान की खेती का सफर वर्ष 2023 में मात्र 5 कि.ग्रा. बीज से शुरू किया

गया। इसमें से 2 कि.ग्रा. बीज अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन हेतु प्रगतिशील किसान श्री मनोज सिंह भरड़ा, ग्राम-कनस्यारी, पोस्ट-गागरीगोल, विकास खण्ड-गरूड़, जिला-बागेश्वर को दिया गया, जबकि शेष 3 कि.ग्रा. बीज को कृषि विज्ञान केन्द्र, काफलीगैर के प्रक्षेत्र में बीज उत्पादन के लिए बोया गया। भरड़ा जी द्वारा उत्पादित बीज का एक भाग केन्द्र को विक्रय किया गया तथा शेष बीज अगली बुआई के लिए सुरक्षित रखा गया।

लाल धान की खेती के साथ-साथ श्री मनोज सिंह भरड़ा द्वारा बासमती धान (पूसा बासमती 1509), पॉलीहाउस में सब्जी उत्पादन, मछलीपालन तथा डेरी व्यवसाय को एकीकृत कृषि प्रणाली के रूप में अपनाया गया है, जिससे उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 10-12 लाख रुपये की आय प्राप्त हो रही है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काफलीगैर द्वारा वर्ष 2022 में 5 कि.ग्रा. बीज एवं एक प्रगतिशील किसान से शुरू हुई लाल धान की यह पहल

कृषि विज्ञान केंद्र, भाकृअनुप-विपकृअनुसं, बागेश्वर, काफलीगैर-263628 (उत्तराखंड)

किसानों के रुझान

प्रगतिशील किसान श्री मनोज सिंह भरड़ा के साथ-साथ जनपद के अन्य किसानों द्वारा भी लाल धान की खेती अपनाई जा रही है। जनपद बागेश्वर के कृषि विभाग ने लाल धान (वी.एल. धान 69) की खेती को बढ़ावा देने के लिए आत्मा परियोजना (एटीएमए) के अंतर्गत 'अभिनव' पहल के तहत अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन स्थापित किए हैं। इसके अंतर्गत जिले के तीनों विकास खण्डों-बागेश्वर, गरूड़ एवं कपकोट में 50 से अधिक किसानों के खेतों पर लगभग 3.5 हैक्टर क्षेत्रफल में इसकी खेती करवाई गई है। किसानों के अनुसार लाल धान की किस्म वी.एल. धान 69 का उत्पादन स्थानीय लाल धान की किस्मों की तुलना में बेहतर है तथा इसकी मड़ाई भी अपेक्षाकृत आसान है। इसके चावल से बनी खीर स्वादिष्ट और पौष्टिक होती है, जिसके कारण इसकी मांग भी बढ़ रही है। किसानों का सुझाव है कि इस फसल को बड़े स्तर पर बढ़ावा देने के साथ-साथ इसके विपणन के लिए बेहतर बाजार व्यवस्था विकसित करने की दिशा में नीति-निर्माताओं को भी ध्यान देने की आवश्यकता है।



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम



लाल धान का मूल्यांकन

सारणी 1. लाल धान (वी.एल. 69) एवं स्थानीय किस्म का तुलनात्मक विवरण

किस्म	पौधों की लम्बाई (सें.मी.)	कल्लों की संख्या	पुष्पगुच्छ की संख्या	परीक्षण वजन (ग्राम)	दाने का रंग
लाल धान (वी.एल. 69)	103.14	14	14	25.14	लालिमायुक्त भूरा
स्थानीय किस्म	111.23	10	8	19.23	हल्का गुलाबी

सारणी 2. वी.एल. धान 69 (लाल धान) का वर्षवार अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.सं.	वर्ष	बीज की मात्रा (कि.ग्रा.)	क्षेत्रफल (हैक्टर)	कृषकों की संख्या
1.	2023	05	0.12	06
2.	2024	120	3.00	30
3.	2025	277	6.90	70
कुल		402	10.02	106

सारणी 3. लाल धान किस्म वी.एल. धान 69 की उत्पादन आर्थिकी

वर्ष	उत्पादन (क्विंटल प्रति हैक्टर)	कुल लागत (रुपये)	सकल कुल आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)	लागत आय अनुपात
2023	49.40	53480.0	141620.0	88140.0	2.64
2024	52.50	55520.0	161000.00	105480.0	2.89

वर्ष 2023 में 120 कि.ग्रा. बीज एवं 30 किसानों तक पहुंची। वर्तमान में वर्ष 2024 में 277 कि.ग्रा. बीज के माध्यम से जनपद के 6 गांवों के 150 से अधिक किसानों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन स्थापित किए गए हैं।

आर्थिकी

सारणी-3 में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार दो वर्षों (2023 एवं 2024) में लाल धान

वी.एल. धान 69 का उत्पादन क्रमशः 49.40 और 52.50 क्विंटल प्रति हैक्टर दर्ज किया गया। इस अवधि में कुल लागत क्रमशः 53,480 रुपये एवं 55,520 रुपये रही, जबकि सकल आय 1,41,620 रुपये एवं 1,61,000 रुपये प्राप्त हुई। परिणामस्वरूप शुद्ध आय क्रमशः 88,140 रुपये एवं 1,05,480 रुपये दर्ज की गई तथा लागत-आय अनुपात 2.64 एवं 2.89 रहा।



पौष्टिक लाल धान वी.एल.-69

बाजार में लाल धान की मांग सामान्य धान की तुलना में अधिक है और इसका विक्रय मूल्य भी काफी ऊंचा मिलता है। एक कि.ग्रा. लाल धान की कीमत लगभग 120 से 250 रुपये तक प्राप्त हो जाती है, जिससे किसानों को अच्छा लाभ मिलता है और लागत-आय अनुपात भी अधिक रहता है। वर्तमान में लाल धान के उपभोग के प्रति लोगों का रुझान लगातार बढ़ रहा है, जिसके कारण इसकी खेती किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध हो रही है। बढ़ती बाजार मांग को देखते हुए उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक किसानों को लाल धान की खेती वैज्ञानिक तरीकों से अपनाने की आवश्यकता है। ■

कृषि विज्ञान केन्द्र, काफलीगैर के प्रयास

कृषि विज्ञान केन्द्र, काफलीगैर, बागेश्वर, जो भाकृअनुप के अंतर्गत विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) के प्रशासनिक नियंत्रण में अप्रैल 2007 से कार्यरत है, अपने अधिदेश एवं उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न किसानोपयोगी गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन कर रहा है। यह केन्द्र अनुसंधान संस्थान की प्रयोगशाला से किसानों के खेत तक नई कृषि तकनीकों को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लाल धान की उन्नत किस्मों के प्रसार तथा इसकी खेती के क्षेत्रफल और उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र दिवस, किसान प्रशिक्षण तथा अन्य विस्तार गतिविधियों का नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। इन प्रयासों के माध्यम से किसानों को लाल धान की वैज्ञानिक खेती के प्रति जागरूक किया जा रहा है तथा उन्हें नई तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।